कविता

रचयता: सुश्री शार्दुला नोगजा

खुद से वादा करें, पक्का वादा करें
अपनी धरती को हम ही सजाऐं
पानी अनमोल है, ये अमिय घोल है
बेजा पानी को हम न बहायें!
अपनी धरती को हम ही सजाऐं

प्लास्टिक सड़ता नहीं, हाय! अड़ता यहीं
काम में कम से कम इसको लाऐं
जितना बन पाए उतना हरित हो लें हम
वायु से भी प्रदूषण हटाऐं
अपनी धरती को हम ही सजाऐं

पेड़ तो मित्र हैं, क्या हसीं चित्र हैं
हम जनम दिन पे पौधे लगाऐं
शोर, कूड़ा, धुंआ! क्या ये जीवन हुआ
साफ पर्यावरण हम बनाऐं
खुद से वादा करें, पक्का वादा करें
अपनी धरती को हम ही सजाऐं!